अध्याय 6

मीडिया और लोकतंत्र

आपने वर्ष 2008 में कोसी के बड़े इलाके में आई विनाशकारी बाढ़ के विषय में सुना होगा।

यह ख़बर आपको किन-किन माध्यमों से पता च

क्या आपके कोई रिश्तेदार, परिचित अथवा मित्र इससे प्रभावित हुए थे?

उनके हालचाल आपको किस माध्यम से प्राप्त हुए थे?

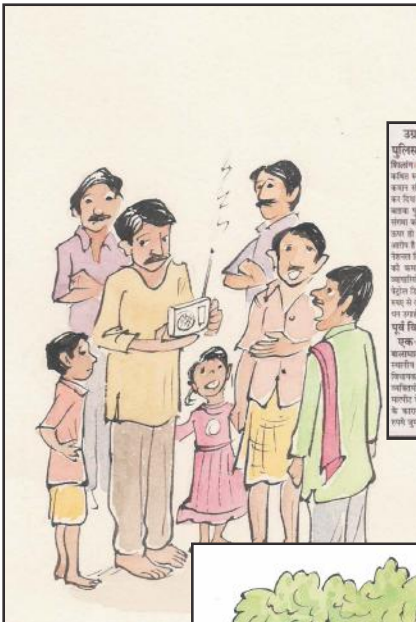

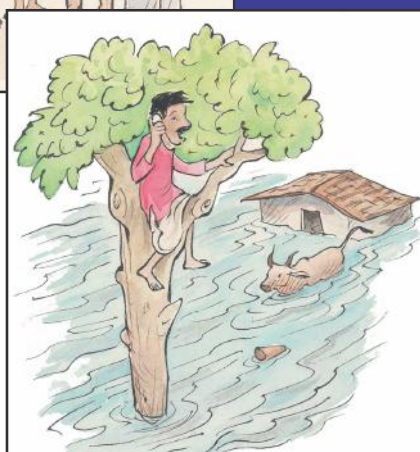

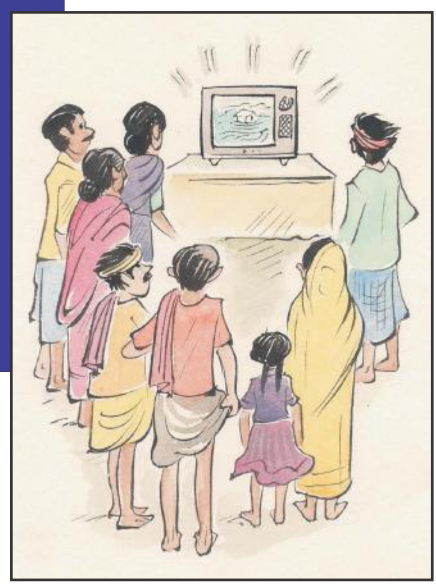

आप जब इन प्रश्नों का उत्तर तैयार करेंगे तो संचार माध्यमों की एक सूची आपके हाथ में होगी।

समाज में विचारों एवं ख़बरों के आदान-प्रदान का माध्यम या साधन ही मीडिया कहलाता है। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टी.वी. चैनल, फोन-फैक्स, मोबाइल, इंटरनेट इत्यादि संचार माध्यमों के विभिन्न रूप हैं जिनकी पहुँच देश-विदेश के जनसमूहों तक होती है। इसलिए इन्हें जनसंचार माध्यम या **मास मीडिया** कहते हैं।

> 'मीडिया' अंग्रेज़ी शब्द 'मीडियम' से लिया गया है। मीडियम का अर्थ माध्यम है।

इस पाठ में हम सब मिलकर संचार माध्यमों के बारे में अपनी समझ बनाने की कोशिश करेंगे। हम देख पाएँगे कि मीडिया हमारे रोज़मर्रा के जीवन और समाज को किस तरह से प्रभावित करती है।

मीडिया के तकनीक में बदलाव

आज के दौर में संचार माध्यम हमारी ज़िन्दगी के महत्त्वपूर्ण अंग बन गये हैं। अख़बार, मोबाइल, टी.वी. के बिना रोज़मर्रा के जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। मोबाइल और इन्टरनेट का व्यापक उपयोग हाल ही में शुरू हुआ है।

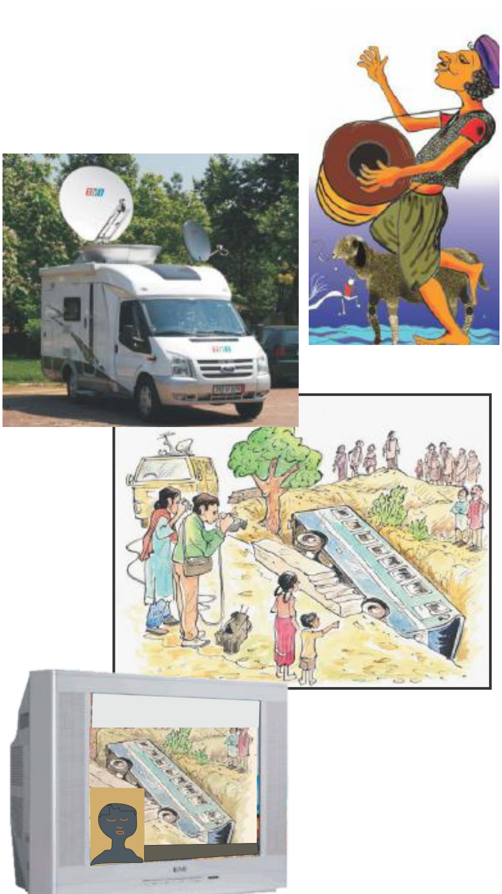

जनसंचार माध्यमों के लिए प्रयोग में आने वाली तकनीक निरंतर बदलती रहती है। बहुत समय पहले कबूतर उड़ाकर, तुरही बजाकर, डुगडुगी बजाकर या ढोल पीटकर संदेश पहुँचाने की प्रथा थी। आज भी कई गाँवों व शहरों में लाउडस्पीकर द्वारा सूचनाएँ दी जाती हैं। संदेश पहुँचाने की यह प्रथा तकनीक के विकास के साथ-साथ बदलती गई। बदलते हुए तकनीक का प्रभाव है कि आज अख़बार, टी.वी., रेडियो के ज़रिए ख़बरों और सूचनाओं को बहुत कम समय में लाखों लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। कई बार घटनाओं का विवरण, लोगों से बात-चीत एवं दृश्य का प्रसारण सीधे घटना-स्थल से किया जाता है।

कुछ चित्रों के माध्यम से हम यह देख सकेंगे कि पिछले सालों में जनसंचार माध्यम के प्रयोग में लाई जा रही तकनीक किस प्रकार बदली है और आज भी बदलती जा रही है।

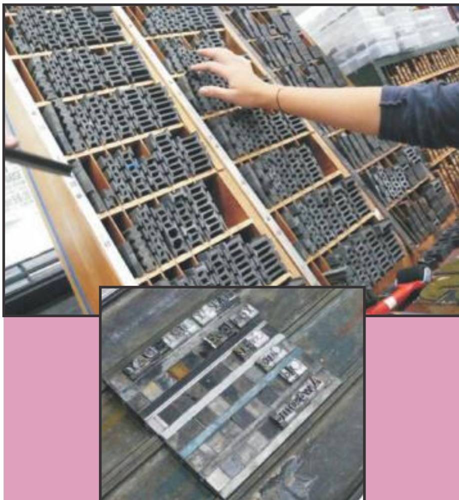

लेटर प्रेस

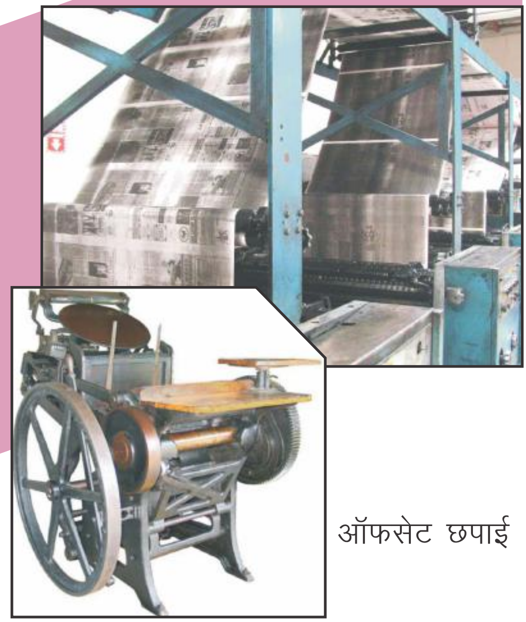

ऑफसेट छपाई

हम संचार माध्यमों की चर्चा दो रूपों में करते हैं– अख़बार, पत्र-पत्रिकाओं के छपे हुए माध्यम के रूप में और टी.वी., रेडियो, इन्टरनेट आदि प्रचलित माध्यमों को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में।

तकनीक के इस विकास का प्रभाव हमारी अपनी जिन्दगी और समाज पर भी पड़ता है। जरा सोचिए कि टी.वी. के आने के बाद हमें पूरी दुनिया की जानकारी चित्रों सहित मिलने लगी है। हम घर बैठे अफ्रीकी जंगलों में रहने वाले जानवरों को देख सकते हैं। क्या ऐसा नहीं लगता कि पूरी दुनिया मानो सिमटकर हमारे कमरे में समा गई हो! कुछ वर्षों पूर्व तक हम सभी 10वीं और 12वीं का परीक्षाफल देखने के लिए सुबह के समाचार पत्र का इंतज़ार करते थे और अब परीक्षाफल की घोषणा होते ही हम इंटरनेट के माध्यम से अतिशीघ्र अपना परीक्षाफल देख लेते हैं।

1. आप पाँच ऐसी ख़बरों की सूची बनाएँ जो भारत के किसी अन्य राज्यों (बिहार को छोड़कर) की हैं और इसकी जानकारी आप को टी.वी. से प्राप्त हुई है।
2. ऊपर दिए गए चित्र को देख कर यह बताओ कि मीडिया के तकनीक में क्या बदलाव आए और इनका क्या प्रभाव पड़ा?
3. आपके क्षेत्र में केबल टी.वी. का प्रयोग कब शुरू हुआ? इससे क्या फर्क पड़ा?

?

मीडिया द्वारा लोगों में जागरूकता

संचार माध्यम देश-विदेश की ख़बरों के साथ-साथ सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को भी हम तक पहुँचाते हैं। कई बार हम देखते हैं कि लोग सरकार द्वारा लिए गए फैसलों का विरोध करते हैं। असहमत होने की स्थिति में नागरिक विरोध के विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। इसके तहत संबंधित विभाग के मंत्री को पत्र लिखना, हस्ताक्षर अभियान चलाना, जुलूस निकालना, धरना इत्यादि करके सरकार को अपने कार्यक्रमों पर पुनः विचार के लिए आग्रह कर सकते हैं। अख़बार, टी.वी., रेडियो में इनकी ख़बरें, रपट एवं विचार-विमर्श का प्रसारण होता है। इस प्रकार इन बातों की चर्चा लोगों तक पहुँचती है और यह जनमानस में आम बहस का मुद्दा बन जाता है। विभिन्न राजनैतिक दल इस बात को भली-भाँति समझते हैं कि जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को वे नज़रअंदाज नहीं कर सकते। इस तरह लोगों की भागीदारी लोकतंत्र को मजबूत करती है।

मनरेगा की न्यूज़

पटना के समीप एक गाँव में मनरेगा कार्यक्रम के तहत मिट्टी कटाई का कार्य किया जा रहा था। इस काम के लिए मज़दूरों की जगह बड़ी मशीनों का इस्तेमाल हो रहा था। इस कार्यक्रम में लोगों को रोज़गार के अधिक से अधिक मौके दिए जाने पर बल दिया गया है। मशीनों का इस्तेमाल वर्जित है। मशीनों की जगह अधिक से अधिक लोगों को काम दिया जाता

है और गाँव में रहने वालों को कम से कम 100 दिनों के रोजगार की गारंटी दी गई है। परंतु यहाँ नियमों की अवहेलना की जा रही थी।

मनरेगा– (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) 2 अक्टूबर 2009 से पूर्व इसे नरेगा नाम से जाना जाता था।

मीडियाकर्मी के द्वारा इस ख़बर को प्रमुखता से अख़बारों एवं न्यूज़ चैनलों पर प्रसारित किया गया।

ख़बरों की जानकारी उच्च अधिकारियों को प्राप्त हुई और गाँव पहुँचकर उन्होंने मशीनों से किए जा रहे काम को तुरंत बंद कराने का आदेश दिया। उन्होंने जाँच की और पाया कि मज़दूरों की जाली उपस्थिति दर्ज कर आवंटित राशि का आपस में बंदरबाट किया जाता है। जाँच अधिकारियों ने दोषियों के खिलाफ कार्रवाई कर मज़दूरों को उनका हक दिलाया।

लोकतंत्र में हम सभी को बोलने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का हक है। मीडिया इस आज़ादी का उपयोग करती है और इस कारण लाखों लोगों तक अलग-अलग विचार एवं ख़बरें पहुँचाती हैं। संचार माध्यम सरकारी कार्यक्रमों की उपलब्धियों एवं नाकामियों को जनता तक पहुँचाती है। इस तरह लोगों में सार्वजनिक बातों पर अपने विचार बनाने में मीडिया की प्रमुख भूमिका है।

1. पिछले पन्ने पर दिए गए चित्र में आप किन-किन तरह के विरोध करने के तरीके पहचान सकते हैं? इनका मीडिया के साथ क्या संबंध है?
2. पटना के समीप गाँव में मनरेगा कार्यक्रम के तहत चल रहे काम में मीडिया द्वारा क्या किया गया और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
3. क्या कभी मीडिया द्वारा गलत ख़बरें भी पहुँचायी जाती हैं? चर्चा करें।

?

ख़बरों की समझ

नीचे दिए गए एक ही विषय वस्तु पर दो विभिन्न ख़बरों को पढ़ें।

झमाझम बारिश से मौसम सुहाना लोगों को मिली गर्मी से राहत

(न्यूज़ ऑफ बिहार की रिपोर्ट)

14 जून 2009

सामान्यतः 14 जून के आसपास बिहार में मानसून प्रवेश होता है परंतु मानसून आने के पूर्व ही झमाझम बारिश और ओलावृष्टि से पिछले कुछ दिनों से तपिश झेल रहे लोगों को काफी राहत मिली। दिन में एकाएक काले-काले बादल मंडराने लगे। आकाश में बिजलियाँ चमकने लगीं। बादलों को तेज़ गरज सुनाई देने लगी और फिर तेज़ हवा और ओले के साथ बारिश होने लगी। इससे लोगों को गर्मी से निज़ात मिली। साथ ही मौसम सुहावना हो गया। बारिश से तापमान में भी काफी गिरावट देखने को मिली। हालांकि मौसम के बिगड़ते मिजाज़ ने तबाही भी खूब मचाई। कई लोग बारिश में भीगतें नज़र आएँ सड़कों पर व आवासीय कॉलोनियों में कई पेड़ गिर गए जिसके कारण आवागमन बाधित हो गया।

मानसून पूर्व बारिश से ही खुली नगर निगम की पोल

(बिहार रोज़ाना की रिपोर्ट)

14 जून 2009

पानी की दो बूंद में ही खुली नगर निगम की पोल। लाखों करोड़ों रुपये खर्च किए जाने के बावजूद कुछ देर की बारिश में ही सड़कें, गली-मुहल्लों में झील सा नज़ारा है। यह थोड़ी देर के लिए हुई बारिश के बाद का नज़ारा है। नगर के लोग डर गए हैं कि अभी तो पूरी बरसात बाकी है। जब हल्की बारिश में यह हाल है तो सावन-भादो में क्या होगा? बारिश के कारण कई सड़कों पर जाम की स्थिति भी बन गयी। मुहल्लों में नाला का गंदा पानी भी उफन कर सड़कों पर फैल गया है। हर साल नगर निगम की ओर से सड़कों की सफाई व छोटे-बड़े नालों की उड़ाही पर लाखों करोड़ों रुपये खर्च होते हैं पर आम नागरिकों की दुर्गति में कोई कमी नहीं आ रही है। थोड़ी बारिश में ही नाले का गंदा पानी व मलमूत्र भी फैल जाता है। मुख्य सड़कों की कौन कहे, गली मुहल्ले की सड़कें भी बारिश व नाले के गंदे पानी से बजा रही है।

1. ''न्यूज़ ऑफ बिहार'' की ख़बर में किस बात की प्रमुखता दी गयी है?
2. दोनों रपट में क्या अंतर है? चर्चा करें।

ख़बरों के महत्त्व को समझते हुए ज़रूरी हो जाता है कि ख़बरें संतुलित हों। एकतरफा ख़बरें हमें किसी भी विषय की सही समझ कायम करने नहीं देती। इन दोनों ख़बरों को दो अलग-अलग तरीकों से लिखा गया है। अलग-अलग पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। हमें किसी भी ख़बर को पढ़ते हुए उसमें छुटे हुए पहलुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। पाठक अपनी स्वतंत्र राय कायम कर सकें इसके लिए ज़रूरी है कि ख़बरों के गुण-दोषों पर विचार करते हुए पढ़ें। इस तरह जिन पहलुओं को प्रमुखता नहीं दी गयी हो वह ध्यान में आ जाती हैं।

संचार माध्यम एक स्वस्थ लोकतंत्र को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम संचार माध्यमों के द्वारा ही देश-दुनिया की सभी जानकारियाँ पाते हैं। आजकल संचार माध्यम और व्यापार का घनिष्ठ संबंध होने से प्रायः संतुलित रिपोर्ट का प्रकाश में आना कठिन है।

हमारी सोच और विचार को प्रभावित करने में मीडिया की प्रमुख भूमिका को देखते हुए हमारे लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि हम दी जा रही ख़बरों का विश्लेषण करें। इस विश्लेषण के लिए अपने-आप से कुछ प्रश्न कर– इस रिपोर्ट से कौन-सी जानकारी देने की कोशिश की गई है, कौन-सी जानकारी छोड़ दी गई है इसे समझने की कोशिश करें।

मीडिया का ध्यान किन बातों पर है?

किन घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाए, इसमें भी संचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। कुछ खास विषयों पर ध्यान केन्द्रित करके संचार माध्यम हमारे विचारों, भावनाओं और कार्यों को प्रभावित करते हैं। हमने इस पाठ में मनरेगा कार्यक्रम की एक घटना के बारे में पढ़ा। इस घटना में हम मीडिया की प्रभावकारी भूमिका को देख सकते हैं। मीडिया की पहल के कारण हमारा ध्यान उस विषय पर गया और लोगों को मनरेगा कार्यक्रम की विशेषताओं के बारे में जानकारी भी मिली।

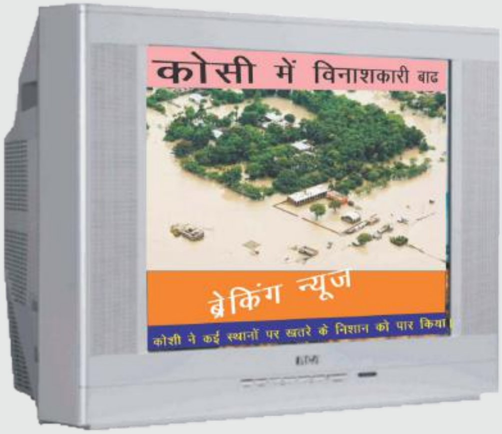

ऊपर दिए गए ख़बरों में से कौन-सी ख़बर हमारे जीवन से ज़्यादा जुड़ती है?

कई बार ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जब संचार माध्यम उन विषयों पर हमारा ध्यान केन्द्रित कराने में असफल रहते हैं, जो हमारे आम जन-जीवन के लिए काफी महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए– गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों को मूलभूत सरकारी सुविधाएँ मुहैया कराना हमारे राज्य की एक बड़ी चुनौती (समस्या) है। राज्य भर में हज़ारों लोग इन मूलभूत सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। फिर भी संचार के माध्यम इस विषय पर बहुत कम ही चर्चा करते हुए दिखाई देते हैं। वहीं दूसरी ओर चर्चित व्यक्ति, सिनेमा, खेल इत्यादि विषयों को प्राथमिकता दी जाती है। कुछ बातों पर मीडिया का अधिक ध्यान होता है और कई जरूरी समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया जाता। हमारे विचारों का प्रभावित करने में मीडिया की प्रमुख भूमिका होती है। इस कारण प्राय: यह कहा जाता है कि संचार माध्यम द्वारा तय किया जाता है कि कौन से सामाजिक मुद्दों को महत्त्वपूर्ण माना जाय।

प्रमुख संचार माध्यमों की इस भूमिका से असंतुष्ट होकर कुछ लोग वैकल्पिक माध्यमों को तलाशने लगे हैं। ये बात नीचे दिए उदाहरण से समझ सकते हैं।

आल वूमेन न्यूज़ नेटवर्क

मुज़फ्फरपुर से लगभग 55 किलोमीटर दूर एक जगह है– दियारा। दिसम्बर 2007 में यहाँ की पाँच महिलाओं ने एक छोटे वीडियो कैमरे की मदद से आस-पास की छोटी-छोटी ख़बरों को गाँव के लोगों तक पहुँचाना शुरू किया। ये महिलाएँ बिना बिजली और टेलीफोन के लोगों की मूलभूत समस्याओं को सरल भाषा में उन तक पहुँचाती हैं।

लेकिन गाँव से लड़कियों को निकालकर उनके हाथ में कैमरा थमाना आसान न था। इसके लिए उनके घर के लोगों से बात करनी पड़ी। पत्रकारिता है क्या? उन्हें ये समझाने में पत्रकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को काफी मेहनत करनी पड़ी। जब ये लड़कियाँ कैमरा, माइक और ट्राइपोड के साथ ख़बरें इकट्ठा करने निकलीं तो इन्हें गाँव के कई लोगों की फब्तियाँ भी सुननी पड़ीं। इन सबके बावजूद लगभग 50 मिनट का पहला दृश्य बनकर तैयार हुआ। पहली बार जब इस दृश्य को चादकेवारी पंचायत हाट में दिखाया गया तो वहाँ के ग्रामीणों के लिए यह आकर्षण की एक नई चीज थी।

इस प्रकार का कोई अन्य कार्यक्रम के बारे में जानते हैं तो चर्चा करें? **?**

अप्पन समाचार '**आल वूमेन न्यूज़ नेटवर्क**' नाम से जाना जाता है। एक गाँव से शुरू होकर आज यह ज़िले के करीब छह प्रखण्डों के दर्जनों गाँवों की समस्याओं को लोगों तक

पहुँचा रहा है। इसमें प्रसारित होने वाली ख़बरें मुख्यत: किसानों के मुद्दों, गाँव की समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, गरीबी, कल्याणकारी योजनाओं में गड़बड़ी, आदि मुद्दों पर सटीक जानकारी देती हैं। इन ख़बरों को देखने वाले गाँव के ही किसान, दुकानदार, मज़दूर, पंचायत के सदस्य, शिक्षक, छात्र-छात्राएँ एवं आस-पड़ोस की ग्रामीण महिलाएँ होती हैं। यह प्रसारण नि:शुल्क एवं अपने खर्चे पर किया जाता है।

1. संचार के वैकल्पिक माध्यमों में हस्तलिखित अख़बार, सामुदायिक रेडियो, लघु पत्रिका इत्यादि का चलन बढ़ा है। शिक्षक की मदद से चर्चा करें।
2. कुछ अख़बारों को पढ़ कर समझाएँ कि आपके इलाके के बारे में छपी ख़बरों में किन बातों पर ध्यान दिया जा रहा है?
3. आपके विचार से क्या कुछ बातों पर मीडिया का कम ध्यान है?

?

इस पाठ में हमने समझने की कोशिश की – मीडिया क्या है? उसके द्वारा जागरूकता कैसे फैल सकती है और उसके ख़तरें क्या हैं? ख़बरों को कैसे समझें एवं मीडिया में प्रसारित ख़बरों की आलोचना करते हुए कैसे देखें? किन बातों पर मीडिया का ध्यान नहीं रहता है और इसका क्या कारण है यह भी समझने का प्रयास करें। अगले पाठ में हम मीडिया और विज्ञापन को समझेंगे।

अभ्यास

1. अगर आपको कैमरा दे दिया जाए तो आप इसका कैसे प्रयोग करेंगे?
2. आपके विद्यालय में होने वाले किसी कार्यक्रम पर एक ख़बर तैयार करें।
3. आपके विचार से संचार का कौन-सा माध्यम ज़्यादा लोकप्रिय है? कारण सहित बताएँ।
4. किसी बड़ी घटना की जानकारी आपको किन-किन माध्यमों से हुई। चर्चा करें।
5. सूचना के आधुनिक संचार माध्यमों से क्या फर्क पड़ा?
6. किसी दो प्रमुख समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये शीर्षकों की ख़बर का विवरण तैयार करें और देखें कि उनकी ख़बरों में क्या समानता और भिन्नता है।